राजस्थान

के

किले

कुम्भलगढ़: शौर्य, कला और इतिहास का जीवंत प्रतीक

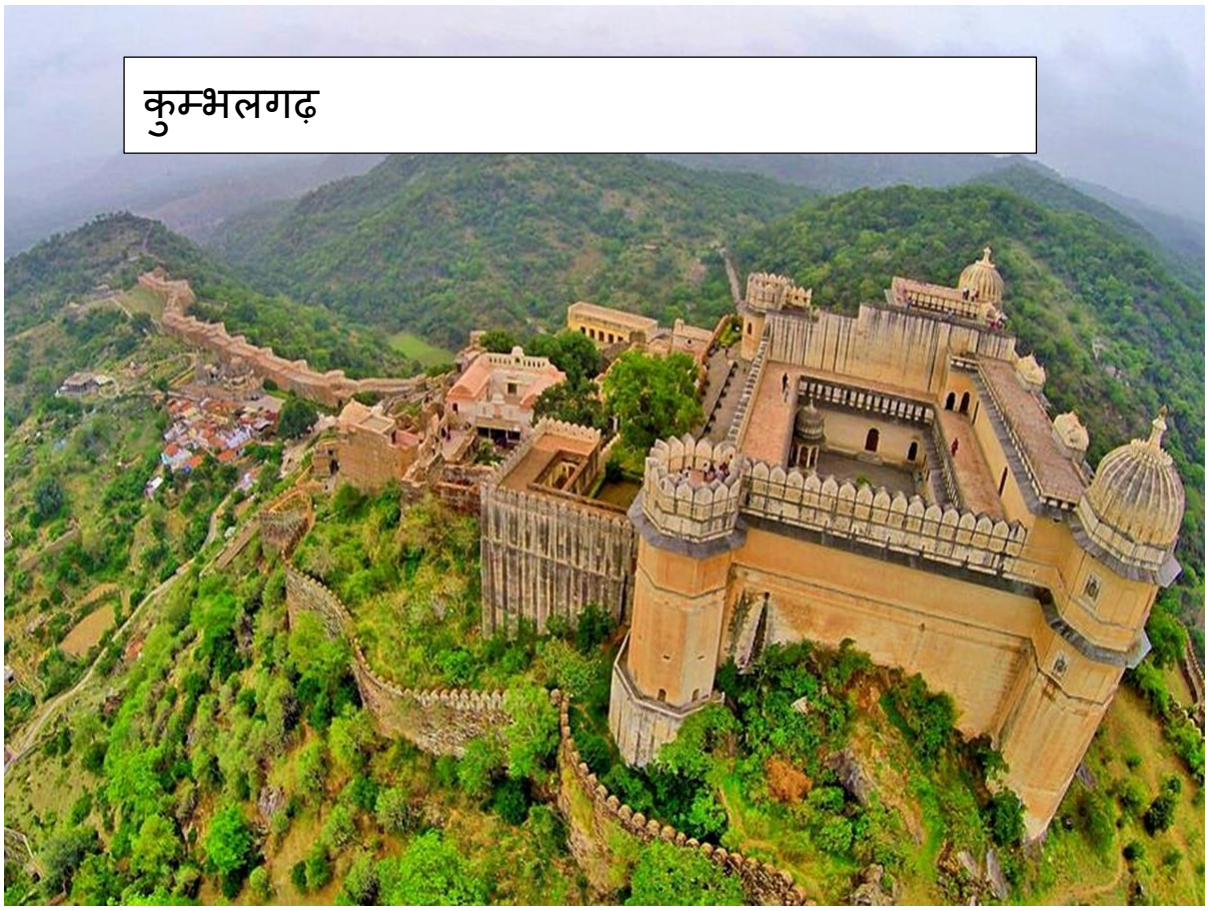

कुम्भलगढ़, राजस्थान के राजसमंद जिले की अरावली पर्वतमाला में स्थित एक ऐसा किला है, जो न केवल अपनी विशालता के लिए, बल्कि अपनी अजेयता और गौरवशाली इतिहास के लिए भी जाना जाता है। इसे अक्सर "भारत की महान दीवार" के रूप में जाना जाता है, जो चीन की प्रसिद्ध दीवार के बाद दुनिया की दूसरी सबसे लंबी दीवार है। यह किला 15वीं शताब्दी में मेवाड़ के महाराणा कुम्भा द्वारा बनवाया गया था, और यह आज भी अपनी भव्यता से पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। लगभग 1,100 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह किला मेवाड़ के उन गुमनाम नायकों और शासकों की गाथा

सुनाता है, जिन्होंने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

स्थापत्य कला का अभूतपूर्व उदाहरण

कुम्भलगढ़ किले का सबसे विस्मयकारी और अनूठा पहलू इसकी विशालकाय सुरक्षात्मक दीवार है। 36 किलोमीटर लंबी और लगभग 15 फीट चौड़ी यह दीवार किले को चारों ओर से घेरे हुए है। इसकी चौड़ाई का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस पर एक साथ आठ घोड़े दौड़ सकते थे। इस दीवार का निर्माण इस तरह से किया गया था कि यह दुश्मन को किले के पास भी नहीं आने देती थी। इसके घुमावदार रास्ते और ऊंचे-नीचे हिस्से हमलावरों के लिए एक दुःस्वप्न की तरह थे।

किले में प्रवेश के लिए सात विशाल प्रवेश द्वार हैं, जिन्हें पोल कहा जाता है। हर पोल का अपना सामरिक महत्व है। इनमें सबसे प्रमुख हैं हनुमान पोल, राम पोल, हल्ला पोल, और विजय पोल। इन पोल्स का निर्माण इस तरह किया गया था कि दुश्मन की सेना को सीधे अंदर जाने से रोका जा सके। इन द्वारों के भीतर बने घुमावदार रास्ते हमलावरों की गति को धीमा कर देते थे, जिससे किले के रक्षकों को उन पर आसानी से हमला करने का मौका मिल जाता था।

किले के भीतर 360 से अधिक प्राचीन मंदिर हैं, जिनमें से 300 जैन मंदिर और बाकी हिंदू मंदिर हैं। ये मंदिर वास्तुकला की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण हैं और तत्कालीन धार्मिक सहिष्णुता के प्रतीक हैं। इनमें से सबसे प्रसिद्ध है नीलकंठ महादेव मंदिर, जिसमें एक विशाल शिव-लिंग स्थापित है। साथ ही, वेदी मंदिर

भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसे महाराणा कुम्भा ने यज्ञ अनुष्ठानों के लिए बनवाया था।

बादल महल और कटारगढ़: किले के मुकुट

किले का सबसे ऊँचा भाग बादल महल है, जो अपनी खूबसूरती और शानदार वास्तुकला के लिए जाना जाता है। यह महल दो भागों में विभाजित है - जनाना महल (महिलाओं के लिए) और मर्दाना महल (पुरुषों के लिए)। इसकी दीवारों पर रंग-बिरंगे और मनमोहक चित्र बने हैं, जो तत्कालीन कला शैली को दर्शाते हैं। बादल महल से अरावली पर्वतमाला का विहंगम और मनमोहक दृश्य दिखाई देता है।

बादल महल के ठीक नीचे, एक और महत्वपूर्ण संरचना है कटारगढ़। इसे "मेवाड़ की आँख" के रूप में भी जाना जाता है। यह किला इतना दुर्गम है कि

इस पर हमला करना लगभग असंभव था। कटारगढ़ महाराणा कुम्भा का व्यक्तिगत निवास था और यह पूरे मेवाड़ राज्य पर नजर रखने के लिए एक रणनीतिक केंद्र के रूप में कार्य करता था। यहाँ से किले की सुरक्षा का पर्यवेक्षण किया जाता था और युद्ध के दौरान सैनिकों को निर्देश दिए जाते थे।

अजेयता और ऐतिहासिक गाथाएं

कुम्भलगढ़ किला अपनी अजेयता के लिए जाना जाता है। इतिहास में इसे सीधे युद्ध में कभी नहीं जीता जा सका। यह केवल दो बार जीता गया, और वह भी धोखे से या पानी की कमी के कारण। एक बार अकबर की सेना ने इसे तब जीता जब किले के अंदर किसी ने पानी के स्रोत को दूषित कर दिया था। इसके अलावा, एक बार मराठों और मुगलों की संयुक्त सेना ने भी इस पर कब्जा किया था।

कुम्भलगढ़ का इतिहास मेवाड़ के दो महानतम शासकों से जुड़ा है। यह वह स्थान है जहाँ 9 मई, 1540 को मेवाड़ के महान योद्धा महाराणा प्रताप का जन्म हुआ था। उनकी वीरता की गाथाएँ इसी किले की दीवारों पर गूंजती हैं। इसके अलावा, कुम्भलगढ़ ने मेवाड़ के शासक उदय सिंह द्वितीय के लिए एक सुरक्षित आश्रय स्थल के रूप में भी कार्य किया था, जब उनकी धाय माँ पन्ना धाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर उन्हें बनवीर से बचाया था। पन्ना धाय उन्हें छिपाकर कुम्भलगढ़ लाई थीं, जहाँ वे सुरक्षित रहे और बाद में मेवाड़ के शासक बने।

निर्माण से जुड़ी एक रोचक किंवदंती

कुम्भलगढ़ के निर्माण के पीछे एक रोचक किंवदंती भी जुड़ी हुई है। कहा जाता है कि महाराणा कुम्भा ने दीवार के निर्माण के कई प्रयास किए, लेकिन हर बार दीवार ढह जाती थी। तब एक संत ने राजा को सलाह दी कि जब तक कोई व्यक्ति स्वेच्छा से अपना बलिदान नहीं देगा, तब तक दीवार का निर्माण संभव नहीं होगा। कई दिनों की खोज के बाद, एक साधु ने स्वयं को बलिदान के लिए प्रस्तुत किया। उसने राजा से कहा कि वह जहाँ तक चले, वहाँ तक उसका सिर धड़ से अलग कर दिया जाए, और जहाँ वह गिर जाए, वहीं दीवार का निर्माण शुरू किया जाए। साधु ने अपनी अंतिम इच्छा के अनुसार बलिदान दिया, और तभी से किले की दीवार का निर्माण सफलतापूर्वक पूरा हो सका।

वर्तमान में कुम्भलगढ़

आज, कुम्भलगढ़ किला एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। इसकी ऐतिहासिक भव्यता और प्राकृतिक सौंदर्य हर साल लाखों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। शाम को यहाँ एक शानदार साउंड एंड लाइट शो आयोजित किया जाता है, जो किले के इतिहास और मेवाड़ की गाथाओं को जीवंत कर देता है। किले के चारों ओर कुम्भलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य भी स्थित है, जहाँ कई दुर्लभ और लुप्तप्राय जानवर पाए जाते हैं, जैसे कि भेड़िया और तेंदुए।

2013 में, कुम्भलगढ़ को राजस्थान के अन्य पाँच पहाड़ी किलों के साथ यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था, जो इसकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्ता को प्रमाणित करता है। यह किला न केवल एक इमारत है, बल्कि यह शौर्य, बलिदान और स्थापत्य कला का एक जीता-जागता प्रमाण है, जो हमें मेवाड़ के गौरवशाली अतीत की याद दिलाता रहता

है। कुम्भलगढ़ की यात्रा करना सिर्फ एक पर्यटन स्थल पर जाना नहीं है, बल्कि भारत के समृद्ध इतिहास और गौरवपूर्ण विरासत को करीब से महसूस करना है।

मेहरानगढ़ किला: राठौर वंश के शौर्य और कला का प्रतीक

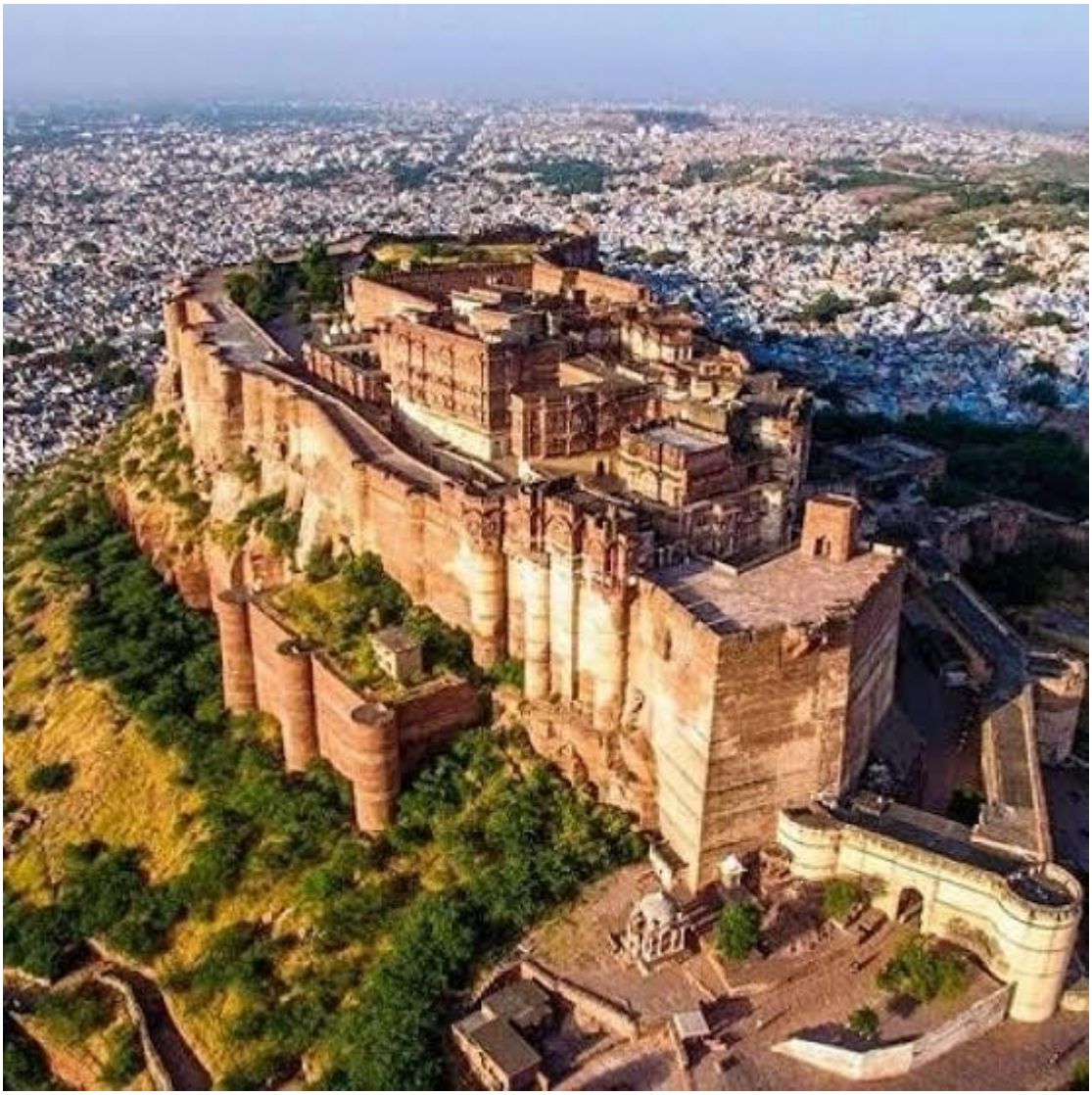

मेहरानगढ़ किला भारत के सबसे बड़े और सबसे शानदार किलों में से एक है, जो राजस्थान के जोधपुर शहर में एक 410 फीट ऊँची पहाड़ी पर स्थित है। इसे 15वीं शताब्दी में राव जोधा द्वारा बनवाया गया था, जो राठौर वंश के प्रमुख थे। यह किला लगभग 5 किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है और इसकी विशाल दीवारें 120 फीट तक ऊँची और 70 फीट तक चौड़ी हैं। इसका नाम

'मेहरान' (सूर्य) और 'गढ़' (किला) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है 'सूर्य का किला', जो राठौर वंश के सूर्य-वंशी होने का प्रतीक है।

किले का निर्माण और एक दुखद किंवदंती

मेहरानगढ़ का निर्माण 1459 में राव जोधा ने तब शुरू किया, जब उन्होंने अपनी राजधानी मंडोर से जोधपुर स्थानांतरित की। किले के निर्माण से जुड़ी एक रोचक और थोड़ी दुखद कहानी है। जिस पहाड़ी पर किला बन रहा था, वहाँ एक साधु रहा करते थे, जिन्हें राव जोधा ने वहाँ से हटने के लिए कहा। साधु ने नाराज होकर राव जोधा को श्राप दिया कि उनका किला हमेशा पानी की कमी से जूझता रहेगा। इस श्राप को दूर करने के लिए, राव जोधा को एक मानव बलिदान देने की सलाह दी गई, जिसके लिए एक व्यक्ति को किले की नींव में जिंदा दफनाया जाना था। राजा राम मेघवाल नामक एक व्यक्ति ने स्वेच्छा से इसके लिए अपनी जान दी और वादा किया कि अगर उसके वंशजों का ध्यान रखा जाएगा, तो किले पर कोई आपदा नहीं आएगी। राजा राम के बलिदान के बाद ही किले का निर्माण सफलतापूर्वक हो पाया।

स्थापत्य कला और सात विशाल द्वार

मेहरानगढ़ की वास्तुकला बेजोड़ है। इसकी दीवारें चट्टान की ढलान के साथ इस तरह से बनाई गई हैं कि वे प्राकृतिक परिदृश्य का ही हिस्सा लगती हैं। किले में प्रवेश के लिए सात विशाल द्वार हैं, जिनमें से प्रत्येक का अपना एक ऐतिहासिक महत्व है।

* जय पोल (Jai Pol): यह द्वार महाराजा मान सिंह द्वारा 1806 में जयपुर और बीकानेर की सेनाओं पर अपनी जीत के उपलक्ष्य में बनवाया गया था।

* फतेह पोल (Fateh Pol): इसका निर्माण महाराजा अजीत सिंह ने 1707 में मुगलों पर अपनी विजय का जश्न मनाने के लिए करवाया था।

* लोहा पोल (Loha Pol): यह मुख्य प्रवेश द्वार है, जिसकी दीवारों पर महारानियों के हाथ के निशान आज भी देखे जा सकते हैं, जिन्होंने अपने पतियों के निधन के बाद सती होने के लिए खुद को बलिदान कर दिया था। यह निशान उन महिलाओं के त्याग और साहस की दर्दनाक याद दिलाते हैं।

किले के भीतर के भव्य महल

मेहरानगढ़ किले के भीतर कई शानदार महल हैं, जो अपनी उत्कृष्ट नक्काशी, रंगीन काँच और सोने के काम के लिए जाने जाते हैं।

* मोती महल (Pearl Palace): यह किला का सबसे बड़ा और सबसे पुराना महल है। यहाँ राजा अपने दरबारियों से मिलते थे। इसकी छत पर काँच और सोने का काम किया गया है, जो मोतियों की तरह चमकता है।

* फूल महल (Flower Palace): यह एक शानदार हॉल है, जिसे महाराजा अभय सिंह ने बनवाया था। इसकी छत, दीवारें और स्तंभ सोने की पत्तियों से सजाए गए हैं। यह राठौर शासकों का निजी मनोरंजन कक्ष था।

* शीश महल (Glass Palace): इस महल की दीवारें और छत रंगीन शीशों से जड़ी हुई हैं, जिससे यह रात में सितारों से भरे आकाश जैसा दिखता है।

* झानकी महल (Janki Mahal): यह वह महल था जहाँ से रानियाँ और उनकी महिलाएँ पर्दा प्रथा के कारण बिना दिखाई दिए बाहर होने वाले कार्यक्रमों और उत्सवों को देखती थीं।

संग्रहालय और सांस्कृतिक धरोहर

आज, मेहरानगढ़ किले के भीतर एक शानदार संग्रहालय है, जिसे मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट द्वारा चलाया जाता है। यह भारत के सबसे अच्छे से संरक्षित संग्रहालयों में से एक है, जहाँ राठौर शासकों की समृद्ध विरासत को दर्शाया गया है।

* शाही पोशाकें और हथियार: संग्रहालय में शाही पोशाकों, गहनों और पगड़ियों का विशाल संग्रह है। यहाँ तलवारें, ढालें और युद्ध के अन्य उपकरण भी प्रदर्शित हैं, जो राठौर योद्धाओं की वीरता की कहानी कहते हैं।

* पालकियाँ और हौदे: यहाँ शाही पालकियाँ और हाथियों पर लगने वाले हौदे (बैठने की सीट) भी रखे गए हैं, जो अपने समय की शिल्प कौशल का अद्भुत नमूना हैं।

* कला और संगीत: किले में राजस्थानी लोक संगीत के कार्यक्रम भी होते हैं, जहाँ कलाकार अपनी पारंपरिक वेशभूषा में राजस्थानी लोकगीत और संगीत प्रस्तुत करते हैं, जिससे आगंतुकों को एक अनूठा सांस्कृतिक अनुभव मिलता है।

निष्कर्ष

मेहरानगढ़ किला सिर्फ एक ऐतिहासिक स्मारक नहीं है, बल्कि यह एक जीवित दस्तावेज है जो राव जोधा और उनके वंशजों के शौर्य, कलात्मकता और बलिदान की कहानी सुनाता है। इसकी विशाल दीवारें, भव्य महल और समृद्ध संग्रहालय हमें राठौर वंश के गौरवशाली अतीत की झलक देते हैं। यह

किला आज भी अपनी भव्यता और गरिमा के साथ खड़ा है, जो हमें इतिहास के पन्नों में झाँकने और उस समय की कहानियों को महसूस करने का मौका देता है।

आमेर का किला: राजपूत और मुगल कला का संगम

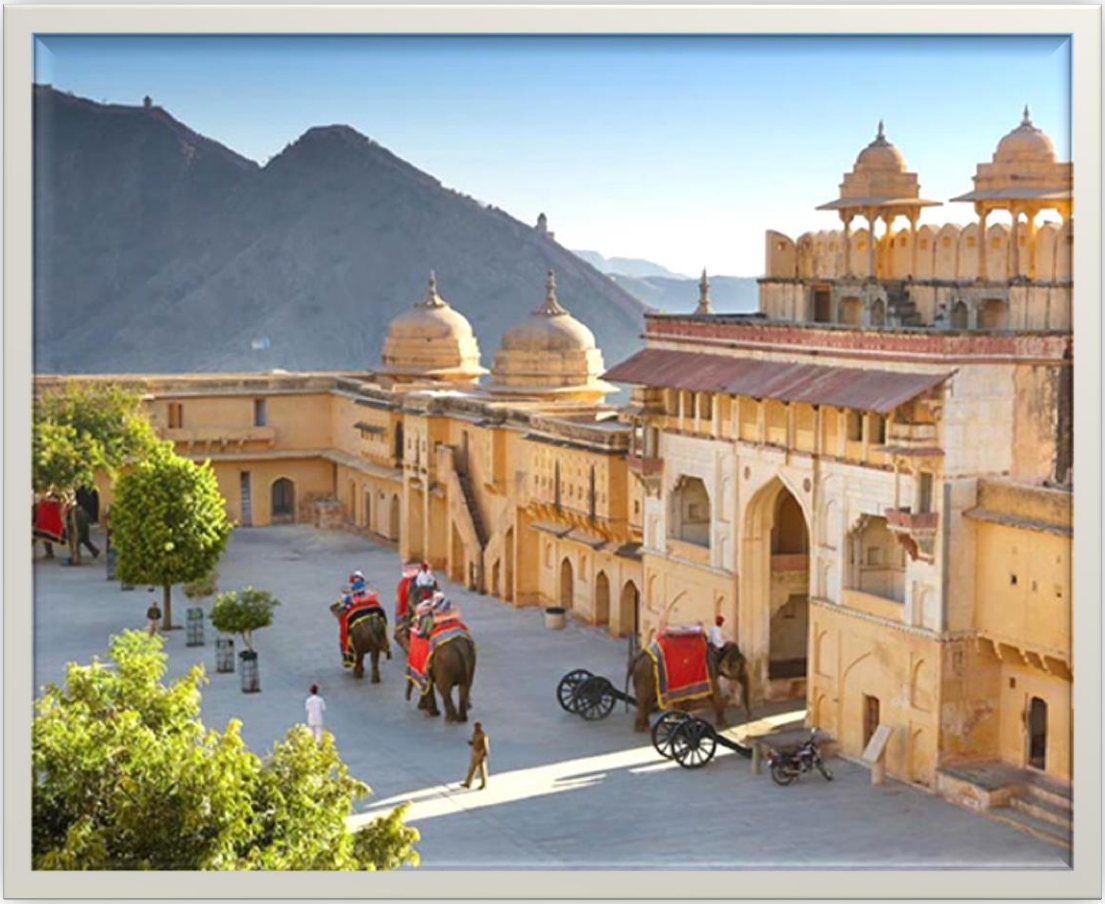

आमेर का किला, जिसे आमेर महल भी कहा जाता है, जयपुर शहर से लगभग 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक शानदार और ऐतिहासिक धरोहर है। यह किला अपनी अनूठी वास्तुकला, भव्य महलों और मावठा झील में पड़ने वाली अपनी मनमोहक परछाई के लिए विश्व प्रसिद्ध है। अरावली की पहाड़ियों पर स्थित यह किला राजपूतों के शौर्य, कलात्मकता और रणनीतिक कौशल का एक बेहतरीन उदाहरण है।

इतिहास और निर्माण: कला और संस्कृति की विरासत

आमेर के किले का निर्माण 1592 ई. में कछवाहा राजपूत शासक राजा मान सिंह प्रथम ने शुरू करवाया था, जो मुगल सम्राट अकबर के सेनापति थे। इस किले को बनने में लगभग 100 साल लगे और इसका विस्तार उनके वंशजों द्वारा किया गया। किले का नाम देवी अंबा के नाम पर रखा गया है, जिन्हें मीना जनजाति के लोग अपनी कुलदेवी मानते थे, जिन्होंने मूल रूप से इस क्षेत्र पर शासन किया था। यह किला हिंदू और मुगल वास्तुकला का एक अद्भुत मिश्रण है, जो उस समय के राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों को दर्शाता है।

किले की वास्तुकला में लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर का बेहतरीन इस्तेमाल किया गया है, जो इसे एक शाही और भव्य रूप देता है। यह किला चार मुख्य खंडों में विभाजित है, जिनमें से प्रत्येक का अपना एक आँगन है।

किले के प्रमुख द्वार और आँगन

किले में प्रवेश का मुख्य द्वार गणेश पोल है, जिसे सबसे भव्य और आकर्षक द्वार माना जाता है। इस द्वार पर भगवान गणेश की सुंदर नक्काशी और रंगीन चित्रकारी की गई है। इस द्वार से किले के दूसरे आँगन में प्रवेश होता है, जहाँ से किले के सबसे महत्वपूर्ण हिस्सों तक पहुँचा जा सकता है।

* जलेब चौक (Jaleb Chowk): यह किले का पहला आँगन है, जहाँ युद्ध से विजयी होकर लौटे सैनिकों और हाथियों की परेड होती थी। यहीं से हाथी की सवारी करके पर्यटक किले के मुख्य हिस्सों तक पहुँचते हैं।

* चाँद पोल और सूरज पोल: जलेब चौक के पास ही दो मुख्य द्वार हैं। एक का नाम चाँद पोल है, जहाँ से पश्चिमी दिशा से आने वाले लोग प्रवेश करते थे, और दूसरा सूरज पोल है, जो सूर्योदय की दिशा में है।

किले के भीतर के भव्य महल

आमेर के किले के भीतर कई शानदार महल और कक्ष हैं, जिनमें से प्रत्येक का अपना एक विशेष महत्व है।

* दीवान-ए-आम (Diwan-i-Aam): यह जनता के लिए बनाया गया एक विशाल सभागार था, जहाँ राजा आम लोगों से मिलते थे और उनकी शिकायतें सुनते थे। इस हॉल में 27 स्तंभ हैं, जो हाथी के आकार की नक्काशी से सजाए गए हैं।

* दीवान-ए-खास (Diwan-i-Khas): यह राजा का निजी सभागार था, जहाँ वह अपने मंत्रियों और दरबारियों से महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करते थे। इसे 'जय मंदिर' के नाम से भी जाना जाता है और इसकी दीवारें और छत फूलों और शीशों के सुंदर काम से सजी हुई हैं।

* शीश महल (Sheesh Mahal): यह किले का सबसे आकर्षक और प्रसिद्ध हिस्सा है। यह दीवान-ए-खास का एक भाग है और पूरी तरह से बेल्जियम से मंगाए गए शीशों से सजाया गया है। इस महल की सबसे बड़ी खासियत यह है कि अगर आप एक छोटी सी मोमबत्ती या माचिस की तीली भी जलाते हैं, तो उसकी रोशनी हजारों दर्पणों में प्रतिबिंबित होकर पूरे कमरे को जगमगा देती है। ऐसा लगता है जैसे छत पर हजारों जुगनू चमक रहे हों।

* सुख निवास (Sukh Niwas): यह महल विशेष रूप से गर्मियों के लिए बनाया गया था। यहाँ एक कृत्रिम जलप्रपात का निर्माण किया गया था, जहाँ से बहती हवा महल के तापमान को ठंडा रखती थी। यह राजा का आराम करने का स्थान था।

रानियों के महल और जनाना ड्योढ़ी

किले के सबसे ऊपरी हिस्से में रानियों के महल और 'जनाना ड्योढ़ी' (महिला कक्ष) स्थित हैं। राजा मान सिंह की 12 रानियाँ थीं, और इसीलिए उनके लिए 12 अलग-अलग कमरे बनाए गए थे। इन सभी कमरों में राजा के कक्ष तक पहुँचने के लिए एक सीढ़ी थी, लेकिन रानियों को आपस में एक-दूसरे के कमरे में जाने की अनुमति नहीं थी।

शिला देवी मंदिर और गणेश पोल

किले के परिसर में स्थित शिला देवी मंदिर भी एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। यह मंदिर देवी दुर्गा को समर्पित है, जिनकी मूर्ति राजा मान सिंह प्रथम 16वीं शताब्दी में बंगाल के जसौर के राजा को हराकर लाए थे। गणेश पोल के पास ही यह मंदिर स्थित है और यहाँ रोजाना बड़ी संख्या में भक्त आते हैं।

आमेर और जयगढ़ किले का संबंध

आमेर का किला, जयगढ़ किले से एक गुप्त सुरंग के माध्यम से जुड़ा हुआ है। यह सुरंग युद्ध के समय शाही परिवार के सदस्यों को सुरक्षित रूप से जयगढ़ किले में पहुँचाने के लिए बनाई गई थी, जो आमेर किले के ठीक ऊपर स्थित है। इन दोनों किलों को एक ही रक्षा प्रणाली का हिस्सा माना जाता था।

वर्तमान में आमेर का किला

आज, आमेर का किला एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। यहाँ रोजाना हजारों की संख्या में पर्यटक आते हैं। यहाँ की सबसे लोकप्रिय गतिविधियों में से एक है हाथी की पीठ पर बैठकर किले तक की यात्रा करना। शाम के समय किले में एक शानदार लाइट एंड साउंड शो होता है, जिसमें किले के इतिहास, राजपूतों की कहानियों और शौर्य गाथाओं को दर्शाया जाता है।

आमेर का किला न केवल अपनी सुंदरता और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है, बल्कि यह बॉलीवुड की कई फिल्मों की शूटिंग के लिए भी एक लोकप्रिय जगह रहा है, जैसे "मुगल-ए-आजम", "जोधा अकबर", "बाजीराव मस्तानी" और "भूल भुलैया"। यह किला यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल सूची में भी शामिल है, जो इसके वैश्विक महत्व को और बढ़ाता है।

आमेर किला सिर्फ एक इमारत नहीं, बल्कि यह राजपूतों की कलात्मकता, वीरता और गौरव का एक जीता-जागता प्रतीक है, जो हमें भारत के समृद्ध और गौरवशाली अतीत की याद दिलाता है।